International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-05-2026, Accepted: 18-06-2026, Published: 03-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 4-5

मूल्य–आधारित शिक्षा पर स्वामी विवेकानंद के विचार

डॉ. रेश्मा निलंगेकर
सहायक प्राध्यापक, स.प.महाविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
मूल्यों के लिए शिक्षा को पुनः उन्मुख करने का एक सबसे महत्वपूर्ण कारण यह तथ्य है कि शिक्षा का वर्तमान मॉडल छात्रों के असंतुलित विकास में योगदान देता है। मूल्य–आधारित शिक्षा वह शिक्षण–प्रक्रिया है जो केवल पुस्तकीय ज्ञान न देकर छात्र के चरित्र, नैतिकता, सामाजिक दायित्व और आध्यात्मिक विकास पर बल देती है। यह "अंक" से "व्यक्तित्व" की ओर ले जाने वाली शिक्षा है। शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो इंसान को इंसान बनाती है।

मूल शब्दः मूल्य, शिक्षा, विचार, समाज, मानवता, व्यक्तित्व, दर्शन

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को नरेंद्रनाथ दत्त के रूप में हुआ। स्वामी विवेकानंद को भारत के प्रमुख संतों में से एक माना जाता है। 19वीं सदी के भारतीय रहस्यवादी रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य, उन्होंने वेदांत और योग के भारतीय दर्शनों को पश्चिमी जगत से पुनः परिचित कराया। स्वामी विवेकानंद बचपन से ही बुद्धिमान थे। वे प्रेसिडेंसी कॉलेज प्रवेश परीक्षा में प्रथम श्रेणी अंक प्राप्त करने वाले एकमात्र छात्र थे। धर्म, इतिहास, सामाजिक, विज्ञान, कला सहित विभिन्न विषयों के उत्साही पाठक थे और उन्हें पुराणों में भी गहन रुचि थी। उनका शैक्षिक दर्शन इन दस शब्दों में समाहित हो सकता है, "शिक्षा मनुष्य में पहले से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" समस्त ज्ञान, लौकिक या आध्यात्मिक, मानव मन में है। मनुष्य ज्ञान को प्रकट करता है, उसे अपने भीतर खोजता है, जो अनंत काल से पूर्व–विद्यमान है। जिसे हम शक्तियाँ, प्रकृति के रहस्य और बल कहते हैं, वे सब भीतर ही हैं। स्वामी विवेकानंद इसे इस प्रकार समझाते हैं कि ज्ञान मनुष्य में अंतर्निहित है, कोई ज्ञान बाहर से नहीं आता, यह सब अंदर है।

शिक्षा का महत्व

शिक्षा मनुष्य को गरिमामय और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए उचित उपकरण देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा समाज में कोई भी वांछित परिवर्तन लाने का एक मूलभूत साधन है जो पूरे विश्व में एक स्वीकृत तथ्य है। यह तभी प्राप्त किया जा सकता है जब विद्यालय सीखने के वास्तविक केंद्र बन जाएँ। शिक्षा न केवल बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में मदद करती है बल्कि उसका भविष्य भी निर्धारित करती है। शिक्षा से राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है। साथ ही, इसे जीवन के लिए पर्याप्त तैयारी की दिशा में सभी क्षमताओं का सामंजस्यपूर्ण विकास लाना चाहिए।

मूल्य शिक्षा

शिक्षा का समस्त उपक्रम मूल्यों के विकास से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। शिक्षाविदों, स्कूल प्रशासकों और शिक्षकों ने एक व्यावहारिक रूपरेखा की माँग की है जिसमें यह स्पष्ट चित्र हो कि बच्चों और युवाओं में समाज–समर्थक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूलों में मूल्यों के लिए शिक्षा कैसे की जाए।
हमारे देश के दार्शनिकों, आध्यात्मिक नेताओं और शिक्षाविदों सभी ने विभिन्न तरीकों से चरित्र विकास के लिए शिक्षा की भूमिका पर बल दिया है।

मूल्य–आधारित शिक्षा के 5 स्तंभ

यमः अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह कहानी आदि महापुरुषों के जीवन–प्रसंग आते हैं।
नियमः शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर–प्रणिधान में प्रार्थना, योग, डायरी लेखन आते हैं।
सामाजिक मूल्यः सहयोग, करुणा, देशभक्ति, पर्यावरण प्रेम आदि छै, सेवा–शिविर, वृक्षारोपण इसके अंतर्गत आते हैं।
सांस्कृतिक मूल्यः वसुधैव कुटुंबकम, सर्व धर्म, समभाव आदि जिसके अंतर्गत त्योहार, उत्सव, भाषा–संगम आते हैं।
व्यक्तिगत मूल्यः आत्म–अनुशासन, समय–पालन, कृतज्ञता आदि जिसके अंतर्गत समय–सारणी महत्वपूर्ण है।

मूल्य, शिक्षा और मूल्य शिक्षा की अवधारणाओं के आधार पर और मूल्यों में शिक्षा की आवश्यकता के आधार पर, मूल्य शिक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं। ये उद्देश्य, निश्चित रूप से, शिक्षा के विभिन्न चरणों में उन्हें फिट करने के लिए उचित विभाजन और विविधताओं के अधीन हैं।

शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए

- छात्रों को सभी प्रकार के मूल्यों में आवश्यक ज्ञान और जहाँ भी संभव हो आवश्यक अनुभव देना।
- छात्रों में मूल्यों को स्वतंत्र रूप से, फिर भी उचित रूप से परखने और चुनने की क्षमता विकसित करना।
- छात्रों में अपने स्वयं के मूल्यों के साथ–साथ दूसरों के मूल्यों के प्रति चिंतनशील जागरूकता की आदत विकसित करना।
- छात्रों को प्रगतिशील आत्म–अवधारणाओं को विकसित करने और वास्तविक बनाने की क्षमता प्राप्त करने में मदद करना जो धीरे–धीरे पूर्णता की ओर ले जाए।
- छात्रों को मूल्यों का एक पदानुक्रम विकसित करने में मदद करना।
- छात्रों में अपने मूल्यों को व्यक्तिगत और सामाजिक अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों के साथ यथासंभव सचेत और तर्कसंगत रूप से जानने की क्षमता विकसित करना।
- छात्रों में नैतिक तर्क की क्षमता विकसित करना और आध्यात्मिक भावना को सुगम बनाना।
- छात्रों में अन्य मूल्यों को समझने की क्षमता विकसित करना और उनमें दूसरों के प्रति सहानुभूति, समानुभूति, सहिष्णुता और मददगार रवैया विकसित करना।

- छात्रों को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ रहने में मदद करना।
- छात्रों को शिक्षा के उद्देश्यों को जानने में मदद करना।
- छात्रों को एकीकृत व्यक्तित्व में विकसित होने में मदद करना।
- छात्रों को एक शिक्षित व्यक्ति की प्राप्ति की आवश्यक विशेषताओं को जानना और उनके प्रति सचेत रहना।
- छात्रों को विद्यमान और आदर्श मनुष्य की अवधारणा बनाने में सक्षम बनाना।
- छात्रों को संविधान में निहित राष्ट्रीय मूल्यों और लक्ष्यों को समझने और उनकी सराहना करने में सक्षम बनाना और उन्हें योग्य नागरिक बनने में मदद करना।
- छात्रों को खुले और व्यापक विचारों वाला बनने में सक्षम बनाना ताकि वे अज्ञानता से पैदा हुए या लिंग, जाति, भाषा और धर्म आदि पर आधारित अंधविश्वासों और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठ सकें।
- उनमें अपने प्रति, साथी प्राणियों, अन्य जानवरों, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निकायों, जिस पर्यावरण में वे रहते हैं, सभी धर्मों और संस्कृतियों के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करना।
- छात्रों को बढ़ती सीमा और एकीकरण के साथ अच्छे, सही और सुंदर की कल्पना करने की क्षमता प्राप्त करने में मदद करना।
- छात्रों को आत्म–ज्ञान और जीवन तथा ब्रह्मांड के प्रति दयालुता में विकसित होने में मदद करना।

मूल्य शिक्षा पर स्वामी विवेकानंद के विचार

स्वामी विवेकानंद भारतीय शिक्षा के इतिहास में प्रसिद्ध दार्शनिकों के साथ–साथ शिक्षाविदों में से एक हैं। उनके शैक्षिक विचार और आदर्श जीवन के दर्शन से प्रभावित रहे हैं। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मन की शक्ति बढ़ती है और बुद्धि तेज होती है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।

विवेकानंद हमेशा मानते थे कि मूल्य शिक्षा के बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। उनके अनुसार, राष्ट्र निर्माण के मामले में प्रत्येक मनुष्य में अच्छे व्यक्तित्व का विकास बहुत आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद के विकास शिक्षा का प्राथमिक कार्य है। उनके अनुसार नैतिकता व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पहलू है। उनके अनुसार मनुष्य–निर्माण शिक्षा चरित्र विकास के साथ–साथ व्यावसायिक विकास में भी निहित है। स्वामी विवेकानंद हमेशा एक बात कहते थे कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जिसका चरित्र पूर्ण नैतिकता से युक्त हो। उनके अनुसार चरित्र के बिना शिक्षा सुगंध के बिना फूल की तरह है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार चरित्र आत्म–विकास की नींव है इसलिए शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में अच्छा चरित्र बनाना है। यह व्यक्ति द्वारा संजोए गए आदर्शों पर निर्भर करता है। इसलिए शिक्षक को अपने छात्रों के सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत करने होंगे। चरित्र विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका शिक्षक द्वारा उच्च चरित्र का व्यक्तिगत उदाहरण स्थापित करना है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार यदि हम अपने छात्रों को एक नैतिक इंसान बनाना चाहते हैं तो स्कूल पाठ्यक्रम इस उद्देश्य को पूरा करने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है क्योंकि उनका मानना है कि मूल्यों को मूल्य–आधारित स्कूल पाठ्यक्रम के माध्यम से हमारे छात्रों में विकसित किया जा सकता है। विवेकानंद ने कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों का सुझाव दिया जिन्हें हमारे स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद के 3 सूत्र

1. **चरित्र निर्माण पहले:** "शिक्षा बिना चरित्र सुगंध के बिना फूल है।" अंकों से पहले मनुष्यता सिखानी चाहिए।
2. **आत्म–श्रद्धा:** "खुद पर विश्वास करो, तब भगवान भी तुम्हारी मदद करेगा।" बच्चों को "मैं कर सकता हूँ" की भावना निर्माण करना।
3. **मानव–सेवा = माधव–सेवा:** मनुष्य सेवा ही ईश्वर सेवा है।

निष्कर्ष

अंत में, हम कह सकते हैं कि मूल्यों और चरित्र निर्माण के संबंध में स्वामी विवेकानंद के विचार और आदर्श हमारी वर्तमान स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्व रखते हैं। क्योंकि केवल वास्तविक विद्यालय ही हमारे छात्रों को सही मार्ग या सही तरीके से कुछ सोचने और करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जैसा स्वामी विवेकानंद कहते हैं। इस प्रकार हम एक ऐसा समाज और राष्ट्र बना सकते हैं जहाँ सब कुछ अच्छा है, कोई भ्रष्टाचार नहीं, कोई असामाजिक गतिविधियाँ नहीं, कोई अनैतिक गतिविधियाँ मौजूद नहीं हैं। विवेकानंद को डॉक्टर–इंजीनियर से ज्यादा "अच्छा इंसान" होना चाहिए। अच्छा इंसान वह है जो शरीर से मजबूत, मन से निडर और आत्मा से करुणावान हो। मनुष्य केवल किताबी पंडित नहीं, बल्कि जो सीखे उसे समाज के लिए इस्तेमाल करे।

संदर्भ

1. स्वामी निखिलानंद (2008), –विवेकानंद बायोग्राफी–, अद्वैत आश्रम, कलकत्ता।
2. अग्रवाल जे.सी. (2007), थॉट्स ऑन एजुकेशन (12वां संस्करण), विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.।
3. मोहित चक्रवर्ती, स्वामी विवेकानंद, एक्सीलेंस इन एजुकेशन (प्रथम संस्करण), कल्पाज़ पब्लिकेशन।
4. डॉ. किरण वालिया (2014), माय आइडिया ऑफ एजुकेशन, स्वामी विवेकानंद ; अद्वैत आश्रम, डिपार्टमेंट दिल्ली एंटली रोड, कोलकाता।
5. वैल्यू एजुकेशन, डॉ. एन. वेंकटैया (1998), एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
6. रोलैंड, रोमेन (2008), द लाइफ ऑफ विवेकानंद – द लिविंग वेदांत, न्यूयॉर्क; पेंगुइन।